>

Title: Need to confer the status of Martyrs to whistleblowers in the country.

श्री सतपाल महाराज (गढ़वाल): महोदया, मैं आपके माध्यम से इस सदन का ध्यान उन व्यक्तियों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं, जिन्होंने भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी। आज जनता से लेकर संसद तक सभी देश में फैले भ्रष्टाचार से उद्वेलित हैं। संसद का एक महत्वपूर्ण सत्र इस ज्वलंत समस्या की भेंट चढ़ गया। स्वतंत्र भारत की सरकार ने स्वतंत्रता सेनानियों को जो सम्मान और सुविधाएं प्रदान की हैं, उसी प्रकार का सम्मान और सुविधाएं उन देशभक्तों को भी मिलनी चाहिए, जिन्होंने राष्ट्र को पतन की ओर ले जाने वाले भ्रष्टाचारियों के खिलाफ आवाज उठाई।

इस संबंध में मैं सर्वप्रथम स्वर्गीय श्री सत्येन्द्र कुमार दुबे को स्मरण करना चाहूंगा, जो सीवान (बिहार) के निवासी थे। वे नेशनल हाइवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया में प्रोजेक्ट डायरेक्टर के पद पर कार्यरत थे। केन्द्र में एन.डी.ए. सरकार के शासन के दौरान गोल्डन कॉरीडार प्रोजेक्ट में भ्रष्टाचार उजागर करने पर उनकी वर्ष 2003 में हत्या कर दी गयी। इसी प्रकार इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन में मैनेजर के पद पर कार्यरत श्री मंजू नाथ षणमुगम द्वारा उत्तर प्रदेश में बसपा शासन के दौरान पैट्रोल में मिलावट का भ्रष्टाचार उजागर करने पर वर्ष 2005 में लखीमपुर खीरी में उनकी हत्या कर दी गयी। इसी क्रम में स्वर्गीय श्री सतीश सेठी ने अन्ना हजारे के साथ मिलकर महाराष्ट्र के तलेगांव में कई जमीन घोटालों को उजागर किया तो वर्ष 2010 में उनकी हत्या कर दी गयी। इसी प्रकार बेगूसराय जिले में स्वर्गीय श्री शशिधर मिश्रा द्वारा रेलवे, प्रशासन, पुलिस तथा विभिन्न योजनाओं की धांधली को उजागर करने पर 14 फरवरी 2010 को बिहार में उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी। गुजरात में पर्यावरण कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री अमित जठेवा द्वारा वर्ष 2008 में गिरवन क्षेत्र में अवैध खनन का भ्रष्टाचार उजागर करने पर जुलाई 2010 में उनकी हत्या कर दी गयी। अभी हाल ही में 25 जनवरी 2011 को पैट्रोल में मिलावट करने का भ्रष्टाचार उजागर करने पर नासिक क्षेत्र के उपजिलाधिकारी यशवंत सोनावणे को जिन्दा जला दिया गया।

महोदया, ऐसे न जाने कितने मामले होंगे, जिनमें भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने वालों को मौत के मुंह में धकेल दिया गया। मेरा आपके माध्यम से केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ अपने प्राणों की आहुति देने वाले इन राष्ट्रभक्तों को शहीदों का दर्जा मिलना चाहिए और उन्हें भी शहीदों के आश्रितों के समान सुविधाएं मिलनी चाहिए। इनके कार्यों को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल कर भावी पीढ़ी को राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए तैयार किया जाना चाहिए।